श्री चन्द्रप्रभ विधान

माण्डला

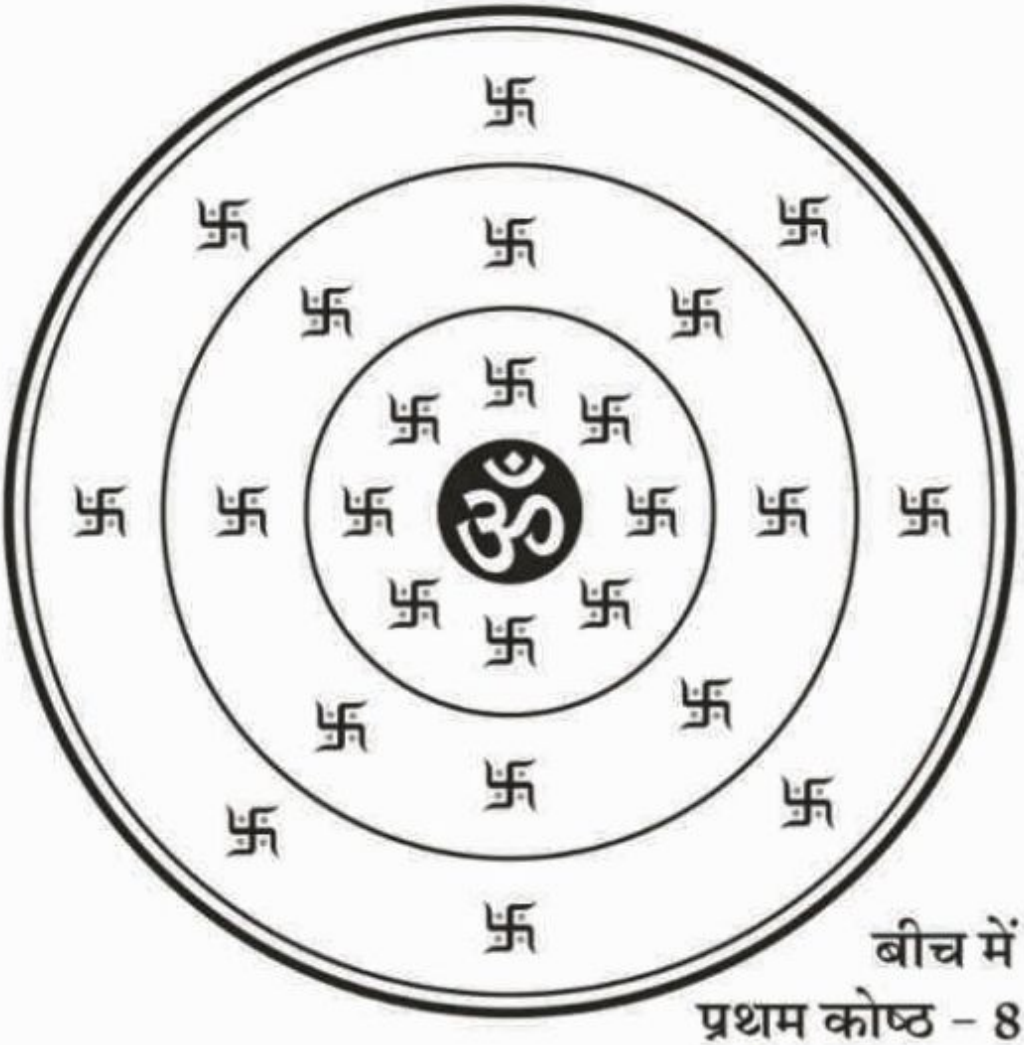

बीच में - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 8 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठ - 8 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ - 8 अर्घ्य
कुल - 24 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

श्री चन्द्रप्रभ स्तवन

शून्यषट्कैकपूर्वायुः, सार्द्धचापशतोच्छ्रितिः।
महासेनात्मजः पायात्, स जिनश्चंद्रलांछनः।।

(भुजंग-प्रयातं छन्द)

परावर्तनान्य-प्यनंतानि पूर्वं।
कृतानि श्रमोऽभू-दिदानीमतीव।।
त्वमेव प्रभो ! पंचसंसारमुक्तः।
अतः प्रार्थये त्वां श्रृणु त्राहि देव !।।2।।
पुरस्तात् सुभक्त्येरितोऽज्ञोऽपि किंचित्।
ब्रुवे तद्भवेत्केवलं जन्महान्यै।।
स्मृतिस्तेऽप्यनंतानि दुःखानि हंति।
न किं हंति नागान् शिशुः सिंहिकाया।।3।।
प्रभो ! त्वां विलोक्य प्रहृष्टं मनो मे।
ध्वनिर्गद्गदो मोदवाष्पस्रवंत्यौ।।
दृशौ स्तश्च साफल्य-जन्मापि मेऽभूत्।
अतः कुड्मलीकृत्य हस्तौ प्रणौमि।।4।।
शशांकांघ्रिसेव्यः परां शांतिमाप्तः।
भवेद्भव्यजंतोर्भवाग्निप्रशान्त्यै।
यतीनां मनो-ऽम्भोजभास्वान् प्रभुस्तं।
सुचंद्रप्रभं नौमि चंद्रांशुगौरं।।5।।
नमो चन्द्रप्रभं देवं, महासेन सुतं वरं।
नमः तीर्थंकरं पूज्यं, 'विशद' ज्ञान धारिणाः।।6।।

श्री चन्द्रप्रभु जी पूजन

स्थापना

दोहा - चन्द्रांकित लक्षण चरण, कांती चन्द्र समान।
आह्वानन् करते हृदय, चन्द्रनाथ भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

श्री जिन पद में नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक हम रोग नशाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन हम गोशीर चढ़ाएँ, भवाताप अपना विनशाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से जिन पूज रचाएँ, अक्षय पद हम भी पा जाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ा गुण गाएँ, काम रोग हम पूर्ण नशाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन पद सुचरु चढ़ा गुण गाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक रत्नमयी प्रजलाएँ, मोह महातम दूर हटाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में यहाँ जलाएँ, अपने सारे कर्म नशाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से जिनपद पूज रचाएँ, मोक्ष महा फल हम पा जाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य सजाएँ, विशद अनर्घ्य सुपदवी पाएँ।
चन्द्रप्रभू की महिमा गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - महिमा जिनकी है अगम, गरिमा का ना पार।
शांती धारा दे रहे, जिन पद बारम्बार।।

(शांतिमय शांतिधारा)

दोहा - गुणानन्त के कोष हैं, चन्द्रप्रभ भगवान।
पुष्पांजलि करते चरण, करते हम गुणगान।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा - चन्दप्रभ पद पूजते, जो भी बालाबाल।
इच्छित फल पावें सदा, गावें यह जयमाल।।

।। विष्णुपद छन्द ।।

चन्द्रप्रभु की महिमा सारे, इस जग ने गाई।
शरणागत बनके लोगों ने, पाई प्रभुताई।।
चन्द्रपुरी में जन्म लिए प्रभु, सुर नर हर्षाए।
मात सुलक्ष्मणा महासेन गृह, विशद हर्ष छाये।।1।।।
राज पाट सुख भोग प्राप्त भी, तुम्हें नहीं भाए।
छोड़ चले गृह जाल जानकर, संयम अपनाए।।
निज आतम का ध्यान लगाकर, योग आप धारे।
विशद ज्ञान पाया प्रभु तुमने, नशे कर्म सारे।।2।।
समन्तभद्र मुनिवर ने तुमको, भाव सहित ध्याया।
प्रकट हुए पिण्डी के फटते, प्रभू दर्श पाया।।
अष्टम तीर्थंकर कहलाए, चन्द्र प्रभु स्वामी।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, मुक्ती पथ गामी।।3।।
तव चरणों में भूत प्रेत की, बाधाएँ जावें।
चरणों की रज माथ लगाते, इच्छित फल पावें।।
दुखिया दर पर आने वाले, दुख खोके जाते।
निर्धन धन की इच्छा करते, इच्छित धन पाते।।4।।

चमत्कार इस सारे जग में, फैला है भाई।
जिसने जो इच्छा की दर पे, वह वस्तू पाई।।
महिमा सुनकर नाथ! आपके, हम दर पे आए।
अर्घ्य चढ़ाने अष्ट द्रव्य का, 'विशद' चरण लाए।।5।।

दोहा - चन्द्र चाँदनी सम रहे, चन्द्र प्रभू भगवान।
जिनकी अर्चा कर 'विशद', पाना शिव सोपान।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - अष्टम तीर्थंकर बने, अष्ट गुणों के ईश।
आठों अंगों को नमित, झुका रहे हम शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

प्रथम वलयः

दोहा - अरहन्तों के गुण रहे, जग में महति महान।
जिनकी अर्चा को यहाँ, करते हम गुणगान।।

(प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जन्म के दश अतिशय प्रगटाए, जगत पूज्यता प्रभु जी पाए।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं जन्मातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दश अतिशय प्रभु ज्ञान के पाए, जब प्रभु केवलज्ञान जगाए।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौदह देवोंकृत कहलाते, महिमा प्रभु जी की बतलाते।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं देवकृतातिशय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दर्शज्ञान सुख वीर्य जगाए, अनन्त चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त चतुष्टय प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रातिहार्य पाएँ मनहारी, समवशरण में विस्मयकारी।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं प्रातिहार्याष्ट प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रीजिन रहे धर्म दश धारी, इस जग में जो मंगलकारी।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं दश धर्म प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु जी दोष अठारह नाशी, होते हैं शिवपुर के वासी।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष निवारकाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

प्रभु जी द्वादश तप शुभ पाएँ, अपने सब जो कर्म नशाएँ।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्ताय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छियालिस मूल गुणों के धारी, हैं अष्टादश दोष निवारी।
चन्द्रप्रभु अतिशय के धारी, पूज रहे हम मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं छियालिस मूलगुण सहिताय श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

द्वितीय वलय:

दोहा - सिद्धों के गुण आठ हैं, शाश्वत हैं शुभकार।
जिनको हम करते यहाँ, वन्दन बारम्बार।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मोतियादाम छन्द)

नशाए ज्ञानावरणी कर्म, जगाए निज आतम का धर्म।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शनावरण नशाएँ कर्म, दर्श गुण प्रगटाएँ निज धर्म।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।2।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शन प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वेदनीय कीन्हे आप विनाश, सुगुण प्रगटाए अव्याबाध।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।3।।

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मोहनीय का कर के भी नाश, किए प्रभु सुखानन्त में वास।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं अनन्त सुख प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आयु का किए नाश भगवान, हुए प्रभु अवगाहन गुणवान।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।5।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

कर्म प्रभु नाम किए हैं अन्त, सुगुण सूक्ष्मत्व पाए गुणवन्त।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।6।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गोत्र का नाशे नाम निशान, अगुरु लघु पाए गुण भगवान।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।7।।

ॐ ह्रीं अगुरु-लघु गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अन्तराय करके कर्म विमुक्त, अनन्तबल प्रगटाए अर्हन्त।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।8।।

ॐ ह्रीं अनन्तबल गुण प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर्म आठों प्रभु किए विनाश, किए प्रभु सिद्धशिला पर वास।
प्रभू जी बने आप तीर्थेश, पूजते जिनके चरण विशेष।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट कर्म विनाशनाय श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा - प्रातिहार्य धारी कहे, तीर्थंकर भगवान।
जिनकी अर्चा कर रहे, अतिशय महिमा वान।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(मोतियादाम छन्द)

अशोक तरु तल में जिन भगवान, देशना देते महति महान।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोक तरु प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभू का सिंहासन छविदार, शोभते जिसपे मंगलकार।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासन प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शोभते छत्रत्रय शुभकार, शीश पे श्री जिन के मनहार।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रहा भामण्डल अतिशयकार, सप्तभव दर्शाए शुभकार।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डल प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिव्य ध्वनि खिरती अपरम्पार, प्रभू की पावन विस्मयकार।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुन्दुभि बाजे बजें अनूप, प्रभू के जय का कहें स्वरूप।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुन्दुभि प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चँवर ढौरें चौंसठ शुभ यक्ष, रहे जो प्रभु भक्ती में दक्ष।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं चँवर प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

पुष्प वृष्टी हो अपरम्पार, करें जो मानो जय-जय कार।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्प वृष्टी प्रातिहार्य संयुक्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रातिहार्य पाए दिव्य ललाम, करें सुर नर पशु चरण प्रणाम।
प्रातिहार्य समवशरण में देव, रचावें मंगलमयी सदैव।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्ट प्रातिहार्य संयुक्त श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं नि.स्वाहा।

जाप्य :- ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः मम सर्व कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा - ऊँचे छह सौ हाथ छवि, उज्ज्वल चन्द्र समान।
चन्द्र चिन्ह युत पूजते, चन्द्र नाथ भगवान।।

(पद्धडि छन्द)

जय चन्द्र जिनेश्वर सुगुण वान, प्रगटाए तुम कैवल्य ज्ञान।
प्रभु स्वयं सिद्ध मंगल स्वरूप, विन्मूरति चिन्मूरत स्वरूप।।1।।

निरपेक्ष निरामय निराकार, हे जिनवर ! शाश्वत समयसार।
जय दर्शन ज्ञान अनन्त वान, जय सौख्य वीर्य गुणमय प्रधान।।2।।
निज साधन से पाये सुसाध्य, आराधन निज कर हुए अराध्य।
निष्काम स्वयं में रहे पाग, जग से निस्पृह हे वीतराग !।।3।।
निर्दूषण जग भूषण जिनेश, नाशे प्रभु जग के सब क्लेश।
रागादि स्वयं जब किए मंद, कर दिए शिथिल निज कर्म बन्ध।।4।।
झूठी ममता पर की विनाश, निज समता में कीन्हे निवास।
तुम हुए सहज ही निर्विकार, हे नित्य निरंजन ! निराकार।।5।।
लक्ष्मी चरणों की बनी दास, तुम सहज हुए उससे उदास।
अद्भुत प्रभुता पाए जिनेश, महिमा फैली जग में विशेष।।6।।
अक्षय अनन्त गुण किए प्राप्त, स्वमेव आप भी बने आप्त।
प्रभु दोष अठारह कर विनाश, स्वभाविक गुण कीन्हे प्रकाश।।7।।

दोहा - कर्मों पर जय प्राप्त कर, हुए आप स्वाधीन।
तव भक्ती में हे प्रभू, रहें सदा ही लीन।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - तव अर्चा करके 'विशद', होवे क्लेश विनाश।
मुक्ती हो संसार से, पूरी होवे आश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा (तिजारा)

दोहा - श्री जिनेन्द्र को नमन कर, जिनवाणी को ध्याय।
वीतराग निर्ग्रन्थ गुरु, के चरणों सिरनाय।।
देहरे के जिन चन्द्र का, चालीसा शुभकार।
'विशद' भाव से गा रहे, पाने सौख्यअपार।।

(चौपाई)

जय श्री चन्द्र प्रभू जिन स्वामी, देहरे वाले शिव पथ गामी।।1।।
शांत छवी मूरत अविकारी, भेष दिगम्बर मुद्रा प्यारी।।2।।
जिनवर नाशा दृष्टिधारी, सर्व जगत में मंगलकारी।।3।।
देवों के जो देव कहाते, सद्भक्तों के कष्ट मिटाते।।4।।
वैजयन्त से चयकर आए, गर्भकल्याण श्री जिन पाए।।5।।
चैत कृष्ण पाँचे शुभकारी, देव रत्न वर्षाए भारी।।6।।
चन्द्रपुरी नगरी कहलाए, महासेन जी राज्य चलाए।।7।।
रही सुलक्ष्मणा जिनकी रानी, जन्मे चन्द्रप्रभू जिन स्वामी।।8।।
पौष वदी ग्यारस कहलाई, सारी जगती हर्ष मनाई।।9।।
जग हितकारी राज्य चलाया, किन्तू जग वैभव ना भाया।।10।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, प्रभु मन में वैराग्य जगाए।।11।।
राग त्याग मुनि दीक्षा धारी, ध्यान किए होके अविकारी।।12।।
फाल्गुण वदी सप्तमी पाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए।।13।।

ललित कूट पावन कहलाए, मोक्ष जहाँ से प्रभु जी पाए।।15।।
समंतभद्र मुनि तुम को ध्याए, पिण्डी फटी दर्श तुम पाए।।16।।
अष्टम तीर्थंकर कहलाते, सोम सुग्रह से शांति दिलाते।।17।।
चमत्कार तुम कई दिखलाए, मन से लोग आपको ध्याये।।18।।
राजस्थान प्रान्त है प्यारा, अलवर जिला में नगर तिजारा।।19।।
उत्तर दिश में देहरा जानो, प्रगटे जहाँ चन्द्रप्रभु मानो।।20।।
सावन सुदि दशमी शुभकारी, तिथि हो गई ये मंगलकारी।।21।।
चिन्ह चन्द्रमा का शुभ पाए, नर नारी जयकार लगाए।।22।।
धवल मूर्ति सोहे मनहारी, जो है पावन अतिशयकारी।।23।।
अतिशय तुमने कई दिखाए, जनता दौड़ी-दौड़ी आए।।24।।
कोई चरणों पूज रचाते, कोई पावन आरति गाते।।25।।
कोई विशद विधान रचाते, कोई शुभ चालीसा गाते।।26।।
फाल्गुन सुदी सप्तमी जानो, भारी मेला जुड़ता मानो।।27।।
शशिधर पावन आप कहाए, ज्ञान प्रकाश आप फैलाए।।28।।
कीर्ति आपकी फैली भारी, गुण गाती है दुनिया सारी।।29।।
भूत प्रेत भी जिन्हें सतावें, उनसे प्राणी मुक्ती पावें।।30।।
दुखिया दर पे जो भी आते, उनके सब संकट कट जाते।।31।।
अन्धा दर पे ज्योती पाए, गूंगे का गूंगापन जाए।।32।।
पुत्रहीन दर पे जो आए, पुत्र सौख्य वह प्राणी पाए।।33।।
ज्ञान हीन सद् ज्ञान जगाए, बुद्धि हीन सद् बुद्धी पाए।।34।।

रोगी अपना रोग नशाए, पर कृत मंत्र भयावह जाए।।35।।
लाखों आते यहाँ सवाली, जाएँ नहीं यहाँ से खाली।।36।।
चरणों की रज है सुखकारी, जीवों के सब संकटहारी।।37।।
गंधोदक जो माथ लगावें, अतिशय शांती प्राणी पावें।।38।।
अखण्ड ज्योति का घृत जो लगाते, उनके सब संकट कट जाते।।39।।
'विशद' आपको जो भी ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।।40।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़के चालिस बार।
पढ़ो पढा़ओ भक्ति से, पाओ शांति अपार।।
रोग शोक दुख दूर हों, और पाप का नाश।
धन सम्पत्ति का लाभ हो, हो शिवपुर में वास।।

मनोकामनापूर्ण जाप्य :-

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री देहरे वाले चन्द्रप्रभ
जिनेन्द्राय नमः।

श्री चन्द्रप्रभु की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ती पथ गामी। ॐ जय...।। टेक।।
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी-2।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।।1।। ॐ जय...
आतम ज्ञान जगाएँ, सद् दृष्टी धारी-2।
मोह महामद नाशी, स्व पर उपकारी।।2।। ॐ जय...
पंच महाव्रत प्रभु जी, तुमने जो धारे-2।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।।3।। ॐ जय...
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया-2।
केवल ज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।।4।। ॐ जय...
तुमको ध्याने वाला, सुख शांती पावे-2।
'विशद' आरती करके, मन में हर्षावे।।5।। ॐ जय...
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये-2।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।।6।। ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो-2।
भक्त खड़ा चरणों में, सारे कष्ट हरो।।7।। ॐ जय...
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी-2।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथ गामी।। टेक।। ॐ जय..